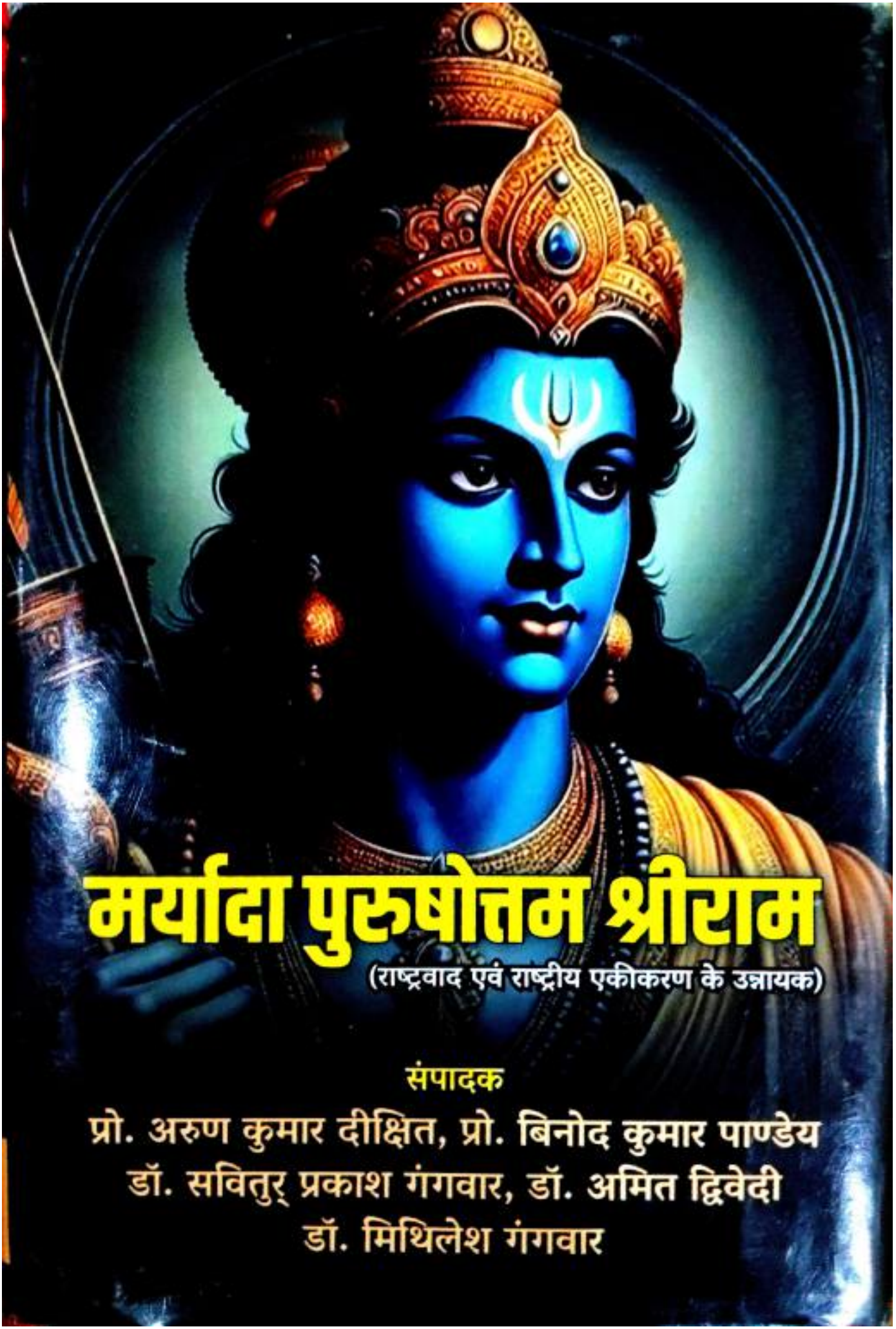

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

(राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकीकरण के उन्नायक)

संपादक

प्रो. अरुण कुमार दीक्षित, प्रो. बिनोद कुमार पाण्डेय

डॉ. सवितुर् प्रकाश गंगवार, डॉ. अमित द्विवेदी

डॉ. मिथिलेश गंगवार

अनुक्रम

1. "मातृदेवो भव पितृदेवो भव" के परिपोषक श्रीराम"
   - **प्रो. अरुण कुमार दीक्षित**
2. "राष्ट्रनायक के अप्रतिम प्रतिमान-श्रीराम"- **प्रो० रेखा शुक्ला** 13
3. "राजाओं के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम"- 19
   डॉ.(श्रीमती)हिमाञ्जल कुमारी, प्रो० विनय विद्यालंकार
4. उत्तररामचरितम् में भवभूति के राम- **डॉ. नीलम त्रिवेदी** 25
5. वाल्मीकि रामायण में मानवाधिकार के उन्नायक राजा राम 31
   - **प्रो० प्रीति राठौर**
6. राम के पारिवारिक जीवन की वर्तमान में प्रासंगिकता 35
   (वाल्मीकि रामायण के परिप्रेक्ष्य में) - **प्रो० आशा रानी पाण्डेय**
7. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता 40
   - **डॉ. ममता शर्मा**
8. पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः - **डॉ. अनीता सोनकर** 47
9. सनातनकवेः रामपरिसंख्या-खण्डकाव्ये भगवतः श्रीरामभद्रस्य 51
   साम्प्रतिकं स्वरूपम् - **प्रो० शोभा मिश्रा**
10. "नारी जीवनोन्नायक श्रीराम" - **डॉ. ममता पाण्डेय** 57
11. महाकवि मुरारि कृत 'अनर्घराघव' नाटक में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम 63
    - **डॉ. रेखा देवी, डॉ. वीना गुप्ता**
12. श्रीराम जी के मर्यादा पुरुषोतम महानायक होने में माता कौशल्या, 68
    कैकेयी एवं सुमित्रा का योगदान - **प्रो० निरंकार प्रसाद तिवारी**
13. भुशुण्डि रामायण में वर्णित श्रीराम का आध्यात्मिक स्वरूप 74
    -**डॉ. चन्द्रप्रभा गंगवार**
14. शक्ति और पराक्रम के प्रतीक श्रीराम 78
    - **प्रो. राजेश कुमार तिवारी "विरल", डॉ. यतीन्द्र सिंह**
15. वाल्मीकि रामायण में निरूपित सामाजिक दृष्टि से श्रीराम का चरित्र 83
    -**डॉ. प्रत्यूष वत्सला द्विवेदी**
16. मर्यादा और सामाजिक समरसता का जीवन्त प्रतीक : श्रीराम 87
    - **डॉ. सन्ध्या सिंह (प्रोफेसर)-डॉ. रमा भाटिया (एसो. प्रो.)**
17. रामायणकालीन युद्ध में नैतिकता एवं श्रीराम का योगदान 93
    -**डॉ. अभय राज सिंह**

98

वाल्मीकि रामायण में मानवाधिकार के उन्नायक राजा राम

प्रो० प्रीति राठौर
विभाग प्रभारी-संस्कृत विभाग
डी० बी० एस० कॉलेज, कानपुर।
पूर्व प्राचार्या ज्वाला देवी विद्या मंदिर
पी० जी० कॉलेज, कानपुर।

मानवाधिकार की वैश्विक संकल्पना 20वीं सदी में मूर्त रुप में फलीभूत हुई किन्तु यदि हम श्रीराम के चरित्र का अवलोकन करते हैं तो उनका सम्पूर्ण जीवन ही मानवता को समर्पित रहा है। मानवाधिकार पारिभाषिक रुप से व्यक्ति के वे प्राकृतिक अधिकार हैं जो उसे जन्म के साथ ही प्राप्त हो जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य जीवन, स्वतन्त्रता एवं समानता के मूलभूत अधिकारों के साथ उत्पन्न होता है। सामान्य अर्थों में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी लिंग, वर्ण, जाति, सम्प्रदाय या मत को मानने वाला हो सभी को समुचित विकास, संरक्षण और सम्मान-जनक जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है। वैश्विक रुप से संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के साथ ही सन् 1945 में मानवाधिकारों का घोषणा पत्र भी लागू किया गया। इसके पूर्व अमेरिकी क्रान्ति, ब्रिटिश क्रान्ति, फ्रांसीसी क्रान्ति या भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का सघर्ष हुआ हो, प्रत्येक जगह मनुष्य के गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकार को प्राथमिकता से उल्लिखित किया गया।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में, मूल अधिकारों में एवं नीति-निदेशक तत्त्वों के अन्तर्गत मौलिक अधिकारों के संरक्षण के निमित्त व्यक्तियों और राज्य को अनेकों अधिकारों दिये गये हैं तथा सर्वोच्च न्यायपालिका को इसका संरक्षण बनाया गया है। सन् 1945 में जब संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई तो मानवाधिकार की उपयोगिता में और वृद्धि हुई जिससे मानवाधिकार का संरक्षण व संवर्धन सुनिश्चित हो सका। वैश्वीकरण के युग में अन्तराष्ट्रीय सीमायें शिथिल हो गयी और मनुष्य को वैश्विक नागरिकता प्राप्त होने लगी किन्तु ऐसे परिवेश के साथ ही नृजातीय विभेद भाषायी व धार्मिक संघर्ष तथा आर्थिक उपनिवेशीकरण के कारण विश्व में मानवता के समक्ष नयी चुनौतियाँ प्रस्फुटित हो रही है। ऐसे में श्रीराम का चरित्र एवं नेतृत्व की पृष्ठभूमि में मनुष्यता की रक्षा की जा सकती है। श्रीराम ने जीवन पर्यन्त सामान्यजन, वनवासी जन, दलित, अछूत एवं

"सर्व भवन्तु सुखिनः [illegible] वाली हमारी वैदिक संस्कृति न केवल मानव वरन् प्रत्येक प्राणी के प्रति उदार दृष्टिकोण रखती है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, स्मृतियाँ, उपनिषद् आदि मानव के गरिमापूर्ण जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित है कि असुरों से पराजित होने के कारण है हमारा राजा से रहित होना। अतः सबने मिलकर मानव के कल्याण व अधिकारों की रक्षा के लिये इन्द्र को अपना राजा चुना।[1] हिन्दू धर्म के आदि ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण व महाभारत मानवाधिकार व स्वतन्त्रता के संरक्षण का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन की अदभुत झाँकी प्रस्तुत करती है, जो जीवन भर मानवाधिकार व मानव स्वतन्त्रता के संरक्षण के लिये संघर्षरत रहे। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म ही प्रजा पालन व जनकल्याण के लिये हुआ है इस विषय में महर्षि नारद का कथन है-

प्रजापति समः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिर्ता।।[2]

श्रीराम के राज्य में लोग प्रसन्न सुखी, सन्तुष्ट, पुष्ट, धार्मिक तथा रोग, व्याधि से मुक्त होंगे। उन्हे दुर्भिक्ष का भय नहीं होगा। कोई कहीं भी अपने पुत्र की मृत्यु नहीं देखेगा। स्त्रियाँ विधवा नहीं होगीं, सदा पतिव्रता रहेगी। किसी को आग का भय नहीं होगा। क्षुधा व चोरी का डर नहीं होगा। सभी नगर और राष्ट्र धन-धान्य से सम्पन्न होगें सभी प्रसन्न होगें। यथा-

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः ।
निरामयो ह्यरोगष्च दुर्भिक्षभय वर्जितः ।।
न पुत्रमरणं केचिद् द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।
नार्यश्च विधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः ।।
न चाग्निजं भयं किंचिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः ।
न वातजं भयं किंचिन्नापि ज्वरं कृतं तथा ।।
न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयं तथा।
नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च।।[3]

महर्षि नारद के इन कथनों से स्पष्ट है कि रामायण कालीन समाज में मानवाधिकार की अवधारणा कितनी पुष्ट थी। प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार था। उसे अपने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की आवश्यक परिस्थितियां सुलभ थीं। अहिल्या जो कि शाप के कारण शिला के रुप में नारकीय जीवन जी रही थी, श्रीराम उसे चरणस्पर्श से गरिमामय जीवन प्रदान करते हैं।[4] रामायण

व साधारण जनों को हानि पहुंचाते हैं। राक्षसों के वध के प्रयत्न विश्वामित्र दशरथ के पास राम लक्ष्मण को लेने जाते हैं। जिससे राक्षसों के आतंक से समाज को मुक्त किया जा सके। खर-दूषण आदि राक्षस और ताड़का आदि राक्षसियाँ सामान्य जन के अधिकारों व स्वतन्त्रता का हनन करना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। वे ऋषियों के यज्ञ कार्यों को अपवित्र और निर्दोष प्राणियों की हत्या कर देते थे। श्रीराम ऋषियों व प्रजा के अधिकारों की रक्षा करने के लिये गुरु की आज्ञा पाकर ताड़का का संहार करते हैं तथा उसके आतंक से प्रजा को मुक्त कराते हैं।[5] श्रीराम के राज्याभिषेक की सूचना से सभी जन आनन्दित हो जाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि राजा दशरथ की भाँति श्रीराम भी प्रजा के अधिकारों की रक्षा और उसका सब प्रकार से कल्याण करेंगे-

सर्वे ह्यनुगृहीताः स्म यन्नो रामो महीपतिः।
चिराय भविता गोप्ता दृष्टलोकपरावरः।।[6]

श्रीराम के वनवास काल में चित्रकूट में सभी ऋषि मुनि राक्षसों के अत्याचार व आतंक से पीड़ित थे। वे श्रीराम से प्रार्थना करते हैं कि हे श्रीराम! इस वन में रहने वाले वानप्रस्थ महात्माओं का यह महान् समुदाय जिसमें ब्राह्मणों की संख्या अधिक है तथा जिसके रक्षक आप हैं राक्षसों के द्वारा अनाथों की भाँति मारा जा रहा है। वन में यत्र तत्र राक्षसों के द्वारा मारे गये मुनियों के कंकालों के ढेर दिखाई देते हैं। इन भयानक कर्म करने वाले राक्षसों ने इस वन में तपस्वी मुनियों का जो ऐसा भयंकर विनाश का ताण्डव मचा रखा है, वह हम लोगों से सहा नहीं जाता है। अतः इन राक्षसों से हमारी रक्षा कीजिये।[7] रामायण में वर्णित ये राक्षस मानवाधिकार का हनन करने वाले आतंकवादियों के समान ही दृष्टिगोचर होते हैं। श्रीराम राक्षसों का संहार करके ऋषियों को उनके आतंक से मुक्ति दिलाते हैं। सीता श्रीराम से प्रार्थना करती है कि यह सही है कि आप राक्षसों का वध ऋषियों व सामान्य जनों के कल्याण व उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कर रहे हैं परन्तु इसमें भी निरपराध प्राणी की हानि नहीं होनी चाहिये-

त्वं हि बाण धनुष्पाणिर्भ्रात्रा सह वनं गतः।
दृष्ट्वा वनचरान् सर्वान् कच्चित्कुर्याः शरव्ययम्।।
क्षत्रियाणामिह धनुर्हुताशस्येन्धनानि च।
समीपतः स्थितं तेजो बलमुच्छ्रयते भृशम्।।[8]

किष्किन्धा काण्ड में बालि सुग्रीव को राज्य से निकाल कर उसकी पत्नी को बलात् अपने पास रख लेता है। तब श्रीराम सुग्रीव की सहायता करते हुये उसके अधिकार की रक्षा कर बालि का संहार करते हैं[9] और उसे किष्किन्धा राज्य का नृपत्व प्रदान करते हैं। राक्षसराज रावण जिसके जीवन का उद्देश्य परोत्पीड़न, हिंसा आतंक व

उनकी हत्या का आदेश देता है परन्तु विभीषण उसे इस कृत्य करने से रोकते हैं-

राजन् धर्मविरुद्धं च लोकवृत्तेष्च गर्हितम्।
तव चासदृषं वीर कपेरस्य प्रमापणम्।।[10]

श्रीराम प्रत्येक प्राणी के प्रति दया का भाव रखते हैं। रावण के भेजे गये दूत जब वानर सेना में वानरों के द्वारा पकड़ कर मारे जाते हैं तब श्रीराम उन्हें तुरन्त छुडाकर अभयदान प्रदान करते हैं-

मेचितः सोऽपि रामेण बध्यमानः पल्वंगमैः।
आनृशंस्येन रामेण मोचिता राक्षसाः परे।।[11]

दुरात्मा रावण से युद्ध व उसके वध के पीछे श्रीराम का उद्देश्य केवल सीता के अपहरण का दण्ड देना नहीं था, बल्कि इस सम्पूर्ण देव व मानव जाति को उसके आतंक से मुक्त कराना था। रामभूमि में श्रीराम का बाण लगते ही अहंकार से पूर्ण वह दानव कटे वृक्ष की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़ा-

स विसृष्टो महावेगः शरीरान्तकरः परः।
विभेद हृदयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः।।
रुधिराक्त स वेगेन शरीरान्तकर भारः।।
रावणस्य हरन् प्राणान् विवेश धरणीतलम्।।[12]

रावण की मृत्यु के पश्चात् विभीषण उसके अन्तिम संस्कार के प्रति अनिच्छा प्रकट करते हुए कहता है-कि सबके अहित में सलग्न रहने वाला यह रावण भाई के रुप में मेरा शत्रु था। ज्येष्ठ होने के कारण गुरुजनोचित गौरव के कारण वह मेरा पूज्यनीय अवष्य था तथापि वह सत्कार के योग्य नहीं है।13 श्रीराम को यह भली भाँति ज्ञात है कि हिन्दु धर्म में अन्तिम संस्कार प्रत्येक मरणात्मा का अधिकार है। अतः वे कहते हैं कि दुष्ट व्यक्ति के बुरे कर्म उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। अतः मृत व्यक्ति के प्रति बैर भाव नहीं रखना चाहिए। वे विभीषण को रावण का अन्तिम संस्कार करने की आज्ञा देते हैं-

मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं न प्रयोजनम्
क्रियतामस्य संस्कारों ममाप्येष यथा तव।।[14]

वनवास से वापस अयोध्या आने पर श्रीराम प्रजा कल्याण के लिए सत्ता संभालते हैं। राजा बनने के पीछे उनका उद्देश्य प्रत्येक प्राणी के अधिकारों व स्वतन्त्रता का संरक्षण करना है। उनके राज्य मे किसी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं है सभी निरोगी व आनन्दित दिखाई देते हैं-

अरोगप्रसवा नार्यो वपुष्मन्तों हि मानवाः।।[15]

साथ ही समस्त भाइयों में सामञ्जस्य स्थापित करने हेतु वनवास प्रस्थान करतें हैं। वे अपने सम्पूर्ण जीवन को समाज से आसुरी शक्तियों को नष्ट करने में समर्पित कर देते हैं। न्याय की रक्षा करने के लिये अपने परिवार का भी बलिदान कर देते हैं। वे अपने सम्पूर्ण जीवन में अछूतोद्धार, वन्य-जीवन में रहने वाले लोगों का एकीकरण एवं सशक्तीकरण, सुग्रीव व विभीषण जैसे व्यक्तियों के न्याय की रक्षा आदि अनेकों ऐसे कार्य थे, जिन्होंने श्रीराम को जननायक एवं मानवाधिकारों संरक्षक के रुप में स्थापित किया।

आज सम्पूर्ण विश्वयुद्ध और संघर्ष की विभीषिकाओं से आक्रान्त है। आतंकवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, एवं साम्प्रदायिकता की अग्नि में सम्पूर्ण मानवता का दहन हो रहा है। मानवों के साथ पशुओं से भी ज्यादा बर्बर व्यवहार हो रहा है। महिलायें एवं बच्चे इन अत्याचारों के कारण असहनीय पीड़ा में हैं। सर्वत्र मानवाधिकार पर संकट है। ऐसे में राजाराम का चरित्र ही सम्पूर्ण विश्व के समक्ष पथदर्शक एवं मार्गदर्शक के रुप में आशा की एक किरण हैं जिससे मानवता का दीप प्रज्जवलित किया जा सकता है। किसी भी राज्य में प्रजा का विकास व उत्थान तभी होगा जब उनके अधिकारों का पूर्णतया संरक्षण होगा। उन्हें विकास के अवसर समान रुप से प्राप्त होगें। सभी को जीवन जीने की स्वतन्त्रता व जीवकोपार्जन की स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। श्रीराम ने तत्कालीन समाज के उद्धार के लिये जो कार्य किये है। वे वर्तमान समय में पूर्णतः प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐतरेय ब्राह्मण-1/14,
2. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण-गीता प्रेस, गोरखपुर बालकाण्ड-1/13
3. तदेव बालकाण्ड-1/90-93
4. तदेव बालकाण्ड-49/15-18
5. तदेव बालकाण्ड-26/23-24
6. तदेव अयोध्याकाण्ड-6/22
7. तदेव अरण्यकाण्ड-6/14-18
8. तदेव अरण्यकाण्ड 6/15-20
9. तदेव अरण्यकाण्ड 16/38
10. तदेव सुन्दरकाण्ड 52/6
11. तदेव युद्धकाण्ड 29/27
12. तदेव युद्धकाण्ड /111
13. तदेव युद्धकाण्ड 111/93-94
14. तदेव युद्धकाण्ड 111/100
15. तदेव उत्तरकाण्ड-49/18-19